

272

ASHA ARCHIVE
2367 I

193
qarblagita

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

Handwritten marks and scribbles at the top of the page.

ASHA ARCHIVE
2367 I

193
qarblaqita

Fragment of a document or book binding, showing a horizontal strip of aged, yellowed paper with two large, irregular holes. The paper is heavily stained and discolored.

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अञ्जुन उवाचः॥ गर्भवासं जगत्
 त्वं किं कथं प्रमतेन ह॥ किं संधं जन्म एहि तः कथं यत्त्वज
 नादितः॥ १ ॥ अञ्जुन विंति गच्छन् इमं नु स हं कथा अर्थ
 ले गर्भवासं जगत् एण भै धुमि र हं हं नः॥ कथा अर्थ ले गी
 जन्म हं हं न हे जना दंत मला ईक हं नु हं वा सः॥ १ ॥ मा
 न जा सु च सु च स्य सी सा रो हं स्प वि सी य वः॥ आसा मे की न न ते

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अञ्जुन उवाचः॥ ॥ श्री भगवान् आसा
 जगत् एव सा माया ले अं च भया का मु छ हं हं को सी सा ए
 जो हं सो भि न्त ज स्तो दे वि छ एक आ मा क न ह्यो दे ए जि व
 नू ध न सी प ति मा ए ह्य कि ॥ २ ॥ अञ्जुन उवाचः॥ आसा
 के न जि ता प्रा य सी सा रो वि र व वं ध ना ॥ के न क र्म प्र यो जे
 न लो को मु च्य त व ध ना तू ॥ ३ ॥ अञ्जुन विंति गच्छ

॥ याते अर्जुन नानिगन्वापदी ॥ श्रीभगवान्नि आग्यागदन्
 भव्य हे भगवान् यो सीता ह रूपे विषयवर्धन देवि नूभ
 या किं आसा कन वे स ग किं चाले जि ति छ को न कर्म ग
 नाले लोक ह ह वी धन दे वि सु क ह ह नू ॥ य ति सु नि भ
 गवान् आसा ग द ह नू ॥ ३ ॥ श्रीभगवान् उवाच ॥
 आसा के क न्य ज्य ते स्तु नि रा सा गृ ह्य ते यदि ॥ नै स्तु र्म क
 र्म क र्म वि प्रा णि क र्म नि लि ये ते ॥ ४ ॥ हे अर्जुन

एक आसा क नू जो ना छो डि नि रा सा क न य डि प र्क ह
 नि क र्म ग किं जो ता क र्म ग ह सो प्रा नि क र्म ले जी
 लि प्र ह दै न नू ॥ ४ ॥ अर्जुन उवाच ॥ का म को ध
 स थालो भ भ्र म मा या ते थै व च ॥ एक म र्म सि व र्म
 ज्ये क र्मा ना स क थ भ ह र्म ॥ ५ ॥ अर्जुण वि ति ग द
 ह नू का म को ध त सै लो भ मा भ्र म न भै र ह्या कि मा या

जस्का मन मा एहा को छ तस्का कर्म को नाश कसो गी हो
लाहे हरे ^{नला} आशा हवो सः॥ ५ ॥ श्री भगवान उवाच॥ ब्र
ह्माग्नि दह्यते कर्म पुराः कर्म न लिप्यते॥ नि कर्म ली
हितो भुत्वा पुन जन्म न विद्यते॥ ६ ॥ श्री भगवान् आ
शागच्छ नृवंश रूपि अग्नौ ले दद्या को कर्म जो छ सो
केलि प्रहृदेन निर्मल मन भया पछि फेरि जन्म हु

^{अनुनलो विनिगर्हन्ति भगवान् ३}
देनः॥ ६ ॥ अनुन उवाच॥ मनुसा युग या याति अ
सुविश्वा सुचिस्तथा॥ एते मनसि वृत्ति कर्म ना सीक
र्थ हरे॥ ७ ॥ मन ले यो पुराण यो पापः यो सुवि यो असु
वि हो भति ठहर यो छि॥ एति मन मा एहा के छ मन्याते
स्को कर्म को नाश कसो गी हो लाहे हरे ^{नला} आशा हवो सः॥
८ ॥ श्री भगवान उवाच॥ येन सर्व कृत्त कर्म कर्तव्यं

समपरी॥ सकल्यश्च विंकल्यश्च नास्ति जन्मन विद्यते॥ ८
 ॥ श्रीभगवानु^{मिले}आज्ञा गर्दछन्॥ जस्ते संपुर्ण ग-पा को क
 र्म कनवी ला लाई अर्पण ग-पा को छ जस्का चित्तमा सैक
 ल्यविकल्प यो दुवै छ न जस्को जन्म यो हि दैन॥ ८ ॥ अजु
 न उवाच॥ धनदा ए सुतार्थ धुर्नाता भोग सुखा निचः॥
 एवमनसिर्वर्तिकर्मनासकथं हरे॥ ९ ॥ अर्जुनैविति

मला इमा शागर्त हवम आने विनि मद्र भियाइ
 गर्दन् हे प्रभो धनसिद्धो एहो र्दय्युभाई नाना तह का भो
 ग तसै सुख एति कुरो मन मा र ह्या को छ दै छ कर्म को नासक
 सो गी होला॥ ९ ॥ श्रीभगवानुवाच॥ धनदा ए सुख
 नास्ति नैव भोग सुखा निचः॥ भक्तियोगे एति र्दय्युपुणा
 जन्मन विद्यते॥ १० ॥ श्रीभगवानु^{मिले}आज्ञा गर्दछन्॥ हे अ
 र्जुन धनदा एदि को सुख र्दय्युति दैन नाना सुख को भोग

पनिहैनम नियोग मारुति जस्का छतस्को फे एजन्म हुदै न भनि
दाभया १० ॥ अर्जुन उवाच ॥ मनस मार्तं गह्वरस्यः तस्मात्तस्य च
लाभवेत् ॥ पंच प्रकृष्य हि का ए कर्मनासकं कथं हरेः ॥ ११ ॥ अर्जु
न वि गच्छे हरे मनस हाति स्वरूप भया का मन को रक्षा रूपि
पाव च लत्पा कन पचि स प्रकृति ले सै ग भै ए हा का अ सं का
ले यति सै गै ए हा का को कर्म नास क सो गि हो ला ॥ ११ ॥ श्री कृष्ण
भगवान उवाच ॥ मनो मार्तं ह्यस्य सात्म मं कुलजुन ॥ वीरु जान

रुति र्यस्य युगजन्म न विद्यते ॥ १२ ॥ इति श्री ग भर्ग गिता
श्री प्रथमो अध्यायः ॥ श्री भगवान् आशा गच्छन् ॥ हे अर्जुन मन
रूपि म क हाति लाई जान रूपि अं कुल कनल गाई वीरु जान
मारुति प्रिति जस्को छा तस्को फे एजन्म हुदै न ॥ १२ ॥ यति
ग भर्ग गिता को प्रथमो अध्याय हो ॥ १ ॥ अर्जुन उवाच ॥
सर्व कर्म कर्त नास्ति सै या सै जो ग धा रणि ॥ पुनः कर्म भवे
धि प्रेम ए नो तस्य का गति ॥ १ ॥ अर्जुन विनि गच्छन् ॥ हे

कृष्णसंपूर्णकर्महोडिसंन्यासयोगधारागन्ध्यापहि
 केरि कर्मगन्धोभन्यात्यो कर्मलि प्रहृष्टलोभपापहि
 तेस्को व्यागतिहिह ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गृ
 हिते योगसंन्यासंपुराकर्मविलिख्यते ॥ पुनस्तत्पुनरा
 मृग्युगर्भवासपुनर्युग ॥ २ ॥ भगवानुवाच ॥ अज्ञानाद्विह
 अजुनसंन्यासयोगधारागन्ध्यापहि केरि कर्मगन्ध
 लिप्रभयोभन्याकेरि जन्ममृत्यू भैगर्भवासकेरि केरिहिह ॥

२ ॥ अजुनउवाच ॥ योगे येन कृतो भ्यास संन्यासैव भवधा
 येन वै एवै भ्रमते नित्यं किं फलं तस्य केसवः ॥ ३ ॥ अजुनवि
 निगच्छतु ॥ हे केसव योगमाजस्तोभाति अभ्यासगन्ध्याकोह
 संन्यासपतिधारागन्ध्याकोहः वै एवै मापुस्त्रिवा विवाधु
 मेहं हंस्त्रिवा फलं क्या हेह भति विविंति गदभया ॥ ३ ॥ श्री
 भगवानुवाच ॥ योगाभ्यासै भ्रमेतिथि वै एवै गृह्यते यदि
 उधरेत्तत्प्रजोवाणि यस्य पुत्रो हि योगवित् ॥ ४ ॥ श्रीग

^{जिने} बान आग्या गद्य भूहि अर्जुन योग को अभ्यास ले युक्तम
^{प्रसन्न} या को वै रीप कन अह न ग या को छुति थो ~~ग~~ यि दि ता कि
 हे सं लो आ फ्रा सा त कुल को उ धा ए ग छ ज स्को छो री योग मा
 मा जीप निजा न्द छ सो पति सी त कुल को उ धा ए ग द ~~ह~~ म्मा
^{श्री भगवानुवाच} ४ ॥ दु ध भ म चै व वै रा ग्पै दु ध भ म योग धा ए री ॥ दु ध भ म
 व ल सान च दु ध भ मो ति स्पृ हो न ॥ ५ ॥ के री श्री कृष्ण

^{भति श्री भगवान जीलि अर्जुन द्वा इ भ्राताग}
^{दो भ्राता}
 आशा ग द ~~ह~~ हे अर्जु रा ॥ वै रा ग्प पति अ रि दु ध भ म स्मृ त
 से योग धा ए न पति यो री सा ए आ रि दु ध भ म छ उ ह म न्द पति
 योग ~~के~~ धा ए न आ रि दु ध भ म छ उ स मा पति नि स्पृ ह म या को म
 दु ध्य आ रि दु ध भ म छ हे अर्जु न ॥ ५ ॥ अर्जु न उ वा च ॥
 कि वै रा ग्प च म स मा रि नु ल सि भु व ना ति च ॥ सर्व क र्म वि
 ए रि री कि वै रा ग्पै ल क्ष री ॥ ६ ॥ अर्जु न वि नि ग र्छ त्

भक्तिविनिगदाभ्याः ४ श्रीगुरुवाच ४ ज्ञानज्ञानेनेषांमाधन ५

हे श्रीकृष्णवैराग्यभक्त्याकोक्याहो अथवायएगिआगमा
लाउनुहोकिअथवातुलसिधाएरागनुहोअथवासंपुर्ण
कर्ममाविहकिगनुहोवैराग्यकोलक्षणक्याहो सोआसाह
बोस ॥ ६ ॥ किंवैराग्यंवनो^{वासो} किमैसाप्रमदिभ्रम ॥
किंजैवधर्मको^{पु}विहकिहिकेसक ॥ ७ ॥ अथवा
वैराग्यभक्त्याकोवनमाजाइवल्लुहोकिअवासंपुर्णपुष्टि

वाहवाएधुमनुवैराग्यहोकिअथवासंपुर्णधर्मकर्ममावि
हकिहनुतोवैराग्यहोकिहेकेसकवैराग्यकोलक्षणआ
साहबोस ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नवैराग्यव
नोवाह्यो नभस्मागंभ्रमन्महि ॥ नजैधर्मकर्मभि
शानं^{ज्ञान}वैराग्यसाधन ॥ ८ ॥ भगवानुवाचागदछहे
अजुनकोसाधानवनमावस्त्यालेपरिहृदैतआग

माय एतिला या पति हु दैन पृथि घु मना ले पति हु दैन
 धर्म क मादि मा वि ए कि हुना ले पति हु दैन केवल वै ए
 ग को साधना ता शान को अभ्यास वरि ति रि क अर्क
 प्र का ले के हि छैन ॥ ६ ॥ भा ग्य द व ति वै ए ग्य मा
 ग्य द व ति ओ ग वी र ~~वा~~ भा ग्य दे वि धु म ति वि धि मा
 ग्य च शान वा ~~म~~ वे म ॥ ९ ॥ भ ग वा न आ शा ग द

ज्ञानवानपनि वडा भाग्ये के गुरि कर हु छ ॥
 छ ॥ हे अजु न वै ए ग्य ता व दे भा ग्य ले ग रि क न हु छ
 सो ग रि क रि षा मे भा ग्ये ले ग रि हु छ ॥ ९ ॥ अजु न उ
 वा च ॥ शान म्प किं स्व रूप स्या क थ शान वि वि ता य र
 ॥ शान वृत्ति न जा ना मि क थ शान च के स व ॥ १० ॥
 अजु न वि कि ग द छ न हे के स व शान को कृ प क
 सो हो सो शान वि न ना क सा रि ले ग नु सो शान

को प्रकाश मजान्दी न कल हो आशा हवो सभ भवि
 ति गरु भया ॥ १० ॥ श्री भगवान उवाच ॥ हर्ष
 सति वासि को न सति न्द्र धो न उद्धि न च स्थुल सुक्ष्म
 निरास यनि पतिराष्ट्र ली वीतिराष्ट्र यनि पतिरा
 ज न हि ॥ ११ ॥ हे अर्जुन ज्ञान को हर्ष पति हो से उन्मो यो को
 पति हो सो सिध हो इति शक्ति पति हो इति उधो जाताम पति हो

पति हो माधि पति हो न नल पति हो इ
 इति उधो आका स पति हो इति न सानु न हुलो हो कलाभ पति हो
 प्रातिर्लप आश्रय गनु न हुत्पा आसय के हि न भया
 कोति ए नति मलय सो ज्ञान छ ॥ ११ ॥ अर्जुन
 उवाच ॥ न सक्ति नति वै स्थुल न सुक्ष्म च निराश्रय
 ति एका निराश्रय म न स्थीर कथं भवेत् ॥ १२ ॥ अ
 र्जुन उवाच ॥ श्री भगवान् न शक्ति हो शिव पति

महाइभागागुहिवमभनि अतुनेनेदीभगतनकाचरकमलमायलभा भावलेवनिरुहनि
पुका
नोविहोइतसातुनहुलोआस्रयपतिनभयाकोकास

पतिनभयाकीआधाहलेपतिनभयाकोरुसोश
नमायोचंचलमनलाईकसोगीथिहंगीलिया
उनुस्थिरकसोगीरुईछु॥ १२ ॥ श्रीमजगतउवा
च॥ यवयवगताहृष्टितवतवगतमन॥ तस्यम
धेमहासुंन्यथुन्यमधेविलियेते॥ १३ ॥ श्रीमज

वात^{मिने}आसागईछनु॥ हेअजुनजाहाजाहाआफुअडे
विजीछताहताहामपमिजीछसोमनकूविचमामहा
धुंन्य^{होलाभुनकाविच}मामनलसहुछ॥ १३ ॥ तवपेचप्रतिकेमनलव
स्थिभवेन॥ तस्यधेलियतेथुन्यथुन्यमधेमनोविसे
र॥ १४ ॥ जाहपेचप्रकृतिरुईछताहमस्थिरहोसने
हिमनस्थिरमयाकासधेमा^{मन}न्यसिसहुंछतेहिम^{मन}पसा

भाष्य श्रीमन्नरहें कृष्णार्जुन वृद्धि मन्त्र स्थिर रहें ॥ १४ ॥ इ
 दि श्री गभगिता यीद्वि ति यो ध्या यः ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥
 इदं च कथितं तत्त्वं देवदेव जगत्पुण्यैः ॥ न जानाति ह्यस्य सत्त्वं
 का गतिस्तस्य के सवः ॥ १ ॥ अर्जुन विनिगच्छतु हे केश
 व यो तत्त्वता तिमिले ^{सत्त्वमय} क ह्यो हे देवदेव हे जगद्गुरो जो ता
 यो तत्त्व क न जानें तत्त्को गति क लो हूँ सो आ जा ह

भनि अर्जुन लो विनिगद भया श्री भगवानजी ने अर्जुन लाई आज्ञा दी
 वो सु ॥ १ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ एकादसि कृता येन नया
 तिथे भिभ्रति योनः ॥ नै एग्यं साधने यस्य तस्य मुक्ति
 हि पी एव ॥ २ ॥ हे पा एव एकादसि को उ पवा स
 ज श्वे ज न्या को छ तिथि दि मा भु म ए ज श्वे सदा के पुत्रि
 फिर्द छ वे एग्य को साधना ज श्वे ज न्या को छ तत्त्को मुक्ति
 निश्चय हूँ ॥ २ ॥ हरि स्मृति पते यस्तु सत्त्व वादि

॥३॥ केहि श्री भगवान् नमो नमो

सहस्रविः ॥ मिथ्यावादादिहितः सैव मुक्तो ही प
५ वः ॥ ३ ॥ हे अर्जुन जो तू ही को स्मरणमाः हृदय
सत्त्वबोलन्यासदा सर्वदा सुविभे हृदया मिथ्यावा
दिले हृदितव भयाको जो सोहि मुक्त हूँ ॥ ३ ॥ पु
जामेव जप ध्यान गिता मृतपथे न हः ॥ मयी प्रीः
ति कृतार्थे न सैव मुक्तो हि पारुड वः ॥ ४ ॥ हे अ

र्जुन ज्ञेय ताममाप्रितिल। गाई पुत्र जाजु प ध्या न गी
गरूपि अमृत पाठ गन्ध जो सो हि मुक्त हूँ भक्ति जा नु भक्त
भीः ॥ ४ ॥ एते भक्ति हि जो भक्ति माता पित्री सार्थे वच ॥
अतिथि पुज मुद्रा सः एव मुक्तो हि पारुड वः ॥ ५ ॥ जो न
मुहमा भ जो वा लन मा भ जो माता मा भ जो पिता मा
भ जो भक्ति भया का अतिथि को पुजा गन्ध भ मोह

तत्पदं सुषभं यो दुषभं यो एति न भयाकोः जो सो हि सु
तु हि छः ॥ ८ ॥ अर्जुन उवाच ॥ कथं देहे तर्था वासकं कथं
देव त्वं प्रियः ॥ अयो मे स शयो दीर्घं कृहि मे युतं वो तम
॥ ९ ॥ अर्जुन विनिगदं हि ॥ हे देव कस्तो देह मोहि तां
वा तं हि छ कस्तो देह त्वं प्रियं हि छ एति स देह मे एव
तु तं मे एवाको छ हे पुतं वो तम आसा ह वो सः ॥ ९

॥ श्री भगवान उवाच ॥ तुलहि भूषणं यत्तमं मनम
निरुत सदा इदियं न जितो यन तं वीति विविचा अ
र्जुनः ॥ १० ॥ हे अर्जुन जत्का सि एमा तुलति को प
न का दादि को भूषणं ल गा या को छ मे ए भक्ति मास
त एतं भयाको छ इदियं न जित्पाको छ ज श्वे हे
अर्जुन तां हि न एवा छः ॥ १० ॥ न मे प्रियतिर्थ

१२
बाह्य न मे प्रियश्च परिहृति ॥ न मे प्रियं न पृथ्या न म
द्रुक्ता स मे प्रिय हे अहम् ॥ ११ ॥ हे अहम् इति धर्मा
वास्तव गन्धा पानि मे एषिया हे हुदे न मे प्रियं न पानि
मे एषिया हे हुदे न पृथ्या न गन्धा पानि मे एषिया
हे हुदे न मे एभक्त जो गच्छे तोहि मे एषिया गच्छे
जोह ॥ ११ ॥ न मे प्रिय धन श्रेष्ठ न मे प्रिय जिह्वा संक

संज्ञा
न मे प्रियो बहु न यो धाम द्रुक्ता स मे प्रिय ॥ १२ ॥ ध
न ले व डो भ या को पानि मे एषिया हे हुदे न हि सा ग
न्धा पानि मे एषिया हे हुदे न धे है स गल दानि गन्धा
पानि मे एषिया हे हुदे न जो ता केवल मे एभक्ति गच्छे जोह
तोहि मे एषिया हे हुदे ॥ १२ ॥ न मे प्रिय इति धर्मा
सि न मे प्रिय ॥ न मे प्रिय प्रिय पुजा हे भो म द्रुक्ता स मे

प्रियः ॥ १३ ॥ हे अर्जुन तिर्य मावात गन्धर्व पति मेरे पिया
 रे हुंदे न वन मावात गन्धर्व पति मेरे पिया रे हुंदे न पुजा
 को आभ गन्धर्व पति मेरे पिया रे हुंदे न जो ता के बल
 मेरा भक्ति गछ स्वहि मेरे पिया रे हुंदे ॥ १३ ॥ न मो
 प्रिय कृता य सो न मो प्रिय सुब रित ॥ न मो प्रिय बहु
 मे म म दु क स च मे प्रियः ॥ १४ ॥ हे अर्जुन यरु गन्धर्व

केवल प्रकचि नलो ३ भनि भगवान जीने अर्जुन लाई आशा गरी थी
 पति मेरे पिया रे हुंदे न बठिया पी रित न पति मेरे पिया
 पिया रे हुंदे न ठे है मे ख धा ए न गन्धर्व पति मेरे पिया रे
 हुंदे न मेरे भक्त गन्धर्व जो कहे मेरे पिया रे हुंदे ॥ १४ ॥
 न प्रियो बहु बुद्धि भ कवि सु ए च न प्रिय ॥ न मे प्रिय
 धन राजा भद्र क स च मे प्रियः ॥ १५ ॥ बहुत बुद्धि भ
 यो को पति मेरे पिया रे ला ग दे न ब डो कवि ब डो शु ए पति

मेरे पि या हे हुँ दे न धन वा न पति राजा पति मेरे पि
या हे हुँ दे न के न ल मेरे भक्ति गे पा मो व मेरे पि या हे
छ भो ते जा न ॥ १५ ॥ इति श्री गभ गिता श्री गिते मो
ध्याये ॥ ३ ॥ अजु ठ उ वा च ॥ भगवान् भक्त वत्सल्य
रव भक्त सहा प्रिया ॥ कथ जाना नि देव इ उ बु हि जना दन
॥ १ ॥ अजु न विनि गंद छ नः हे भक्त वत्स हे भगवान्

निश्राम ह ह व हु ते पि या हे छ न भन्याति भक्त लो ई क
हो ग रि जा नो यो वा न आ ज्ञा ग तु ह वो स् भक्ति विनि ग या
र श्री कृष्ण आसा ग छ न ॥ १ ॥ श्री भगवान् उ वा च ॥ श्री कृ
ष्ण हे भक्त स सी तो की यति इ दी य नि श्री गिते ॥ गाना अ
पमान यो सु ल्यः सुख भो ज न वी छ निः ॥ २ ॥ हे अजु न जो
न मे रे भक्त हुँ छ सो न अति सी तो पि हुँ इ इ य क न ग्र ह व ल

कलग-पा काम नर अयमान इदु वै वरे भया का वीठिया
 भोग हन के इच्छा न भया का जो सो हि मेरा भक्त हु र भक्ति
 जानु ॥ २ ॥ तिरुल्लि तिरुहिति न्नी काय भोग त वादि
 दिती ॥ सहजा न दे संपत्तो मे द भे दो वि वा ज्जि ता ॥ ३ ॥
 हे गंजु न सबे कु ए दे वि आ सा ग-पा को स्पृह पति न भया को
 सुद स क दि के हि काम मा पति भोग मा पति इच्छा न जा ता

हे अर्जुन एक विन ग दिसु न

सहजा न द क पा इ ए व न्या भे द मति अ भे द यति न भया को
 जा मे रा भक्त छे न ॥ ३ ॥ त म स रु की मि वा ति हे या हे य वि व
 जि त ॥ काम को चा दि ए हि ती स मो भ न्नी य मु र्जु न ॥ ४ ॥ मे रा
 स रु पति को हि छे न मे रा मि त्र पति को हि छे न फे ली ला व लु प
 ति को हि छे न छो दि न्या व लु पति के हि छे भक्ति जा न्या का म को धो
 दि जो भ मो ह म ड मा ल य ले ए हि न भया को जो सो मे रा भक्त हो भक्ति

जानुहे अजुनः ४ । नमो भक्तसुखे वांछा नवीक्षा नवीक्षा ^{नवादि} सीषुती नवा
का पुष्प पा पा तां मुक्ते वा छा पि नाजुन ॥ ५ ॥ हे अजुन मे
एभक्तका सुख मा पति वा छा हृदै न धन मा पति श्री मा पति
वा छा हृदै न पुष्प मा पति पा प मा पति इच्छा हृदै न कति क
हु मुक्त मा पति का छा हृदै न ॥ ५ ॥ अजुन उवाच ॥ कि जाति
की धर्म कायि कि लोका मित्र वीध वा ॥ कि भोग कि सु

वका मे कि कर्म तत्पति स्पृहः ॥ ६ ॥ हे भगवान् नित्य
हृद्गता को का हृजोति हो कि अथ वा धर्मे सि त हो कि कर्म
वंचु सि त हो कि का य सि त हो कि लो का सि त हो कि अथ वा मित्र
सि त हो कि अथ वा भोग सि त हो कि सुख सि त हो कि व्या कर्म
सि त हो तत्को नित्य स्पृह ता व्या मा हो सो आशा हृद्गता
भति अजुन वी निग पा र श्री भगवान् आशा ग र्ह न

॥ ६ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ जिवन्मुक्तो हि मे भक्त कंठ
तुलसिभुवली ॥ तस्य कर्मनिलिपि पद्मपत्रोऽयं
तथा ॥ ७ ॥ हे अजुन गलामा तुलसि को माला धारण
गपा को हूँ मेरो भक्त जिवन्मुक्तो हो तस्ते केहि कर्म
गपा पति कर्म को लिखहु दैन कमल का पात माएखा
को पाति जसै एहि छ भक्ति जानू ॥ ७ ॥ एक भाव यदा

वेति तेन कर्मनिलिप्यते ॥ तेन कर्मनिलिप्यते पद्मपत्रो
दृश्यते ॥ ८ ॥ हे अजुन जब एहि भाव कर पायो तब
तस्ला ई कर्मलिखहु दैन नू जसै पाति माएखा को कम
ल का पात मा पातिले पहु दैन नू तसै सो गपातिले गपा
का कर्म पतिले पहु दैन भक्ति जानू ॥ ८ ॥ एक भाव
यदा वेति तेन कर्मनिलिप्यते ॥ कर्म कर्म क्रिया नास्ति

विश्वकालोपतिहृत् ॥ ९ ॥ हे अर्जुन वरुणैर्भावकत पायो त
व तस्मै गन्धाको कर्म ले प्रहृदि नः तोग्गानिका कर्म पति हृत
अ कर्म पति हृत किं या पति हृत जस्का तस्मै विश्व पति
काल पति वस गन्धाको हृत् भति जातु ॥ ९ ॥ इति श्री गम्भ
गितायी चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्री गवान्नुवाच ॥
एतन्किं हृत् ऐतिर्प तस्किं क्रियते यमः ॥ गर्भे तस्मिन् से इ

रुसमर्थो हृत व्याजुतः ॥ १ ॥ हे अर्जुन जस्मै ता सहा सर्वदा
हृत् मा विदुः एवाम् को हृत् तस्को यम राज्ञो गम्भ
सकं हृत् तस्को यम तस्को यम तस्को यम तस्को यम तस्को यम
वसमर्थो हृत तस्मै त्वा पति स मर्थ हृत् भति जातु ॥ १ ॥ ज
ल म धे यथा पद्म जले पद्म तालि पते ॥ संसारो वृत्त्यो
मत्तु हृत् सा हृत् तालि पते ॥ २ ॥ हे अर्जुन जस्मै जल

भाएहा कोह ते पति संसार
 कावि च मा कमल एहा कोह ता पनि त्यो कह मल जल लेले
 पहुदै न त सौ सीसा ए मा एहा कोह ता पनि त्यो भक्त सीसा ए
 भ मलिलि पहुदै न ॥ २ ॥ ए श्व जाना तो सा नि सीसा ए
 च की क्षति नि जाना तो न मुक्तो सौ सीसा ए न च की क्षति
 ॥ ३ ॥ हे अजु न जाना त जान मा ए न भयो कोह सो सा सी
 सा ए को दया ग दै न तो जानि केवल जानले पु फुट्टे

वीचा हुँ छु भनि जस्य मनी श्री भग ॥ ३ ॥ अजु न उवाच ॥
 अभक्ष म क्षे ते सा नि अकर्म कर्म का एक ॥ अमुचि श्व
 सुगति तालि कथं मुक्तो ज ता दै न ॥ ४ ॥ अजु गवि
 नि गहिर हे भगवान् ज्ञानि ह ह ता अभक्ष को पनि
 भो आम ग छु अकर्म पो ते ज छि र्वा ए वा ए अमुचि भया का
 मुचि कैले पति हुँ दै न त त सा सा नि कख ग र मुक्तु

नृः ॥ ४ ॥ श्री गवान उवाच ॥ ब्रह्म ज्ञान तदा लीनं स्व
 चक्षुः शोभते ॥ अमर्शमक्षाने जाति यथा एरण
 दुता सत ॥ ५ ॥ श्री भगवान् आशा गच्छेत् अजु
 न ब्रह्म ज्ञान तदा लीनं भूया को इव हले सर्वे लाई
 छाकि एव्या को छ भगि देव पा ए सा शा गि ह ह भ भ
 ह न को भ क्ष न ग हे लो पति रो ख ह दै न ज लो व न

माको अग्नि पवित्र ह ह त लो ज्ञानि पति पवित्र
 नृः ॥ ५ ॥ सव सव य नृ सुय सव भ क्षे ह न स न
 ॥ सव सव ये ते वायु यथा पापे न लि पे ते ॥ ६ ॥ हे
 अजु र सुजले पति घाति या व छि या वस्तु सुका इ लि
 छ र आगि ले सवे वस्तु को भ क्ष रा ग छ न वायु पति स
 उ र वस्तु क न सुका इ लि छ न ता पति न लो ति मि लाई

घटि या वटि या को दोष लाग दें न तसै जानि लाइ प
ति भक्ष भक्ष को दोष हु दें ॥ ६ ॥ विल सा नाम तु त्वा
६ अ सा ग के व व ध ते ॥ विल सा नाम तात्वा ६ कहे तु
यदि किलि वी ॥ ॥ हे अर्जु विल क न जी तु जो हो सो
ता अ मृ ग का त्वा ६ म या को ॥ विल क न जी तु जो हो
त्वहि विष हो ते हि व ध न क हा उ छ विल सा रूपि अ मृ ग

को त्वा ६ पा उ मा जो छ सो ता पा प क न ना स ग छ ॥ ७ ॥
का व भा ६ स ह त्वा नि क्ष णा ६ ह ति या व क ॥ तथा ६ ह
ति पा पा नि विल सा ६ मा भ वे न ॥ ८ ॥ हे अर्जु न ज सौ ह
जा ६ भारि का थ का तु प्रो म या को प नि य के छि न मा आ
जो ले ता स ग छ ६ ठा उ छ त सौ विल न पा या य छि स वै
पा प को ना स ग छ ॥ ९ ॥ अर्जु न उ वा च ॥ म म श्व च ज

तायस्य केनचेन्द्रियनिग्रहः ॥ कर्मकर्मकृतं नास्ति कथं कालो वसिष्ठ
 न ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥ हे श्रीकृष्ण जस्य को ता मनचंचरु तस्माद् इन्द्रि
 यहरु क्वाले वशुरु नत ॥ कर्मयनि अकर्मयानि दुवै न गै न्याले कालक
 न कसो गरिवशगला ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गुरुद्वारे मन क
 ता तत्वेन्द्रियनिग्रहः ॥ कर्मकर्मकृतं नास्ति तेन कालो वशीकृत ॥ १० ॥
 इति श्रीगर्भगीतायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हे अर्जुन

हका चरणा मामनलार्द्रं तत्त्वको अभ्यासले गरिन्द्रियको निग्रहं क
 र्मयनिगन्या को केन भन्या तस्को काल सह जैव शुरुं ॥ १० ॥ इति श्रीग
 र्भगीता भाखायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अलयायु रथ हानि
 श्व द्रिद्रोऽख विह्वल ॥ नानाये निगथंगत्वा सुत्पुमाप्नोति बालक
 ॥ १ ॥ अर्जुन उवाच ॥ हे श्रीकृष्ण अलयायु भयाका धनहीन भैरिद्रभ
 याका दुःखलेपीडा पायाका छंदा अनेक नानाये निमाजन्म पायएवा

लेखे माकमोग रिमर्क ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मसंहर्तयेयम्
ब्रह्म हत्याकरोति यः तेन पापेन चाप्नोति गर्भं ह्युच्यते बालक ॥ २ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ हे अर्जुन जीता ब्रह्मस्य कनहरागर्हन् ॥ जीता ब्रह्म हत्याक
नमर्हन् ॥ तेही पापले गर्भवास बांदा ह्यायाको बालमै अवस्थामामर्ह
॥ २ ॥ देवगुरु कृत्या निन्दा वेदवांस्तरा निन्दक ॥ तेन पापेन हे पार्थ जन्म
ना भूकरो भवेत् ॥ ३ ॥ हे पार्थ देवताको गुरुको पूजादि क्रियाको वेदको

वांस्तरा हरुको निन्दजोगर्ह ॥ तेही पापले फेरि जन्म ग्रामभूकर को जन्म
हुन्छ ॥ ३ ॥ विप्रोना भेषात वेद क्षत्रियोहीन युध्यते ॥ तत्पापेन युतपा
र्थ जन्मना जन्मुको भवेत् ॥ ४ ॥ हे पार्थ वांस्तरा काकुलमा जन्मभै वे
दन पठत्या क्षत्रिय काकुलमा उत्पन्नभै कनयुद्धनगर्ह वैरिदेवि
हराउत्या तेही पापले युक्तभयाका पापले फेरि जन्म पाउदा स्थालभै
जन्म पाउछ ॥ ४ ॥ यतिनेन्द्रियनिग्राही राग द्वेष करोति च तेन पापेन भो

कुमा [मा] स [मा] बाल [मा] गुरु [मा] पिती [मा] मित्र [मा] या [मा]
 ली [मा] न [मा] न [मा] व [मा] न [मा] धु [मा] ॥ १४ ॥ हे अ [मा] न [मा] ज [मा] न [मा]
 नि [मा] न [मा] क [मा] न [मा] व [मा] न [मा] म [मा] य [मा] की [मा] कु [मा] मा [मा] क [मा] न [मा] ब [मा] ल [मा] सि [मा] क [मा]
 गुरु [मा] कि [मा] ली [मा] क [मा] न [मा] मि [मा] त्र [मा] कि [मा] श्री [मा] क [मा] न [मा] ए [मा] ति [मा] मा [मा] एक [मा] प [मा] ति [मा] जो [मा] ता [मा]
 ति [मा] ग [मा] ह [मा] सो [मा] न [मा] एक [मा] मा [मा] स [मा] धे [मा] व [मा] त [मा] ग [मा] ह [मा] ॥ १४ ॥ प [मा] ल [मा] न [मा] हि [मा] न [मा]
 म [मा] न [मा] प [मा] ल [मा] द [मा] व [मा] प [मा] ल [मा] एक [मा] प [मा] ल [मा] नि [मा] द [मा] र [मा] न [मा] य [मा] न [मा] प [मा] ल [मा] के [मा]

वसे कुजे ॥ १५ ॥ हेअनुनिजोता परइका ताहि मारत
 कोछ परइका रुप कला हछ परका नि दाग छ हो प्र
 गुग गुग रा एक मा वस गछ ॥ १५ ॥ य ता गि ताव त
 व दया यन न र क्षित त तापे न भवे कु षि न र
 सति धुर्वी ॥ १६ ॥ हेअनुनिज भले ताव न मा ड छा ली
 ज गा ड छ जो ता यो ड छा ली लग ड छ ॥ तया भया कामानी

बालन हरको द्रव गन्य मित्र व्यहक
 सलाई देखी कन नरो किनुप लागी जांछ ति दुवै तै म न्या पछि नरक वास
 गर्छन् ॥ १६ ॥ गुरु देखि न्यप देखि देखिय श्रत प भ्रान् ॥ दिज देखि कतो
 येन प्रती राक्षसो भवेत् ॥ १७ ॥ गुरुको देखि गन्य राजाको देखि गन्यो तम
 श्रि हरको देखि गन्य जति छन ति राक्षसको यो नि पाउछन् ॥ १८ ॥ गुरु विप्र
 जपं हति य श्रनारित पश्चिन् ॥ तस्य मार्गो न ज्ञेया सि या व श्रु दिवा करे
 ॥ १९ ॥ गुरु कन राजा कन ब्राह्मण कन स्त्री हर कन तपश्चि कन जोता मा

स्वर्ग कि दाचीत भविजात

देख तस्को स्वर्ग जाहा सम च न सुख र हं छ ताहा सम ह देन ॥ १८ ॥ अर्जुन उ
वाच ॥ ब्राह्मणो जीवत स्यार्थे मिथ्या च पर द्या ट क ॥ पर कष्ट न जानाति क
थ सुक्तिर्जनार्दन ॥ १९ ॥ अर्जुन विंति गच्छन् ॥ हे श्री कृष्ण आफ न जीविका
निमित्त जुठै सराई लाई नार्द ह पराई काहु बय नि जो दे ब दे न ते ला प्राण
शिहर क सारी त ले सु क हं छ न यो आशा ह व स ॥ १९ ॥ श्री भगवानुवाच
आत्मा धेय विनार्थ च पर स्प प्राण द्या ट न त त्या ये न भवे तु रवी कृ मिम

अर्जुन जीविका

वतिवानर ॥ २० ॥ श्री भगवान आज्ञा गच्छन् ॥ जो प्राणि आफ न निमित्त अर्थ
के ही न भेक न पराई को प्राण द्या ट ग ह ते ही पा प ले तु रवी हं छ किरा को
यो ति हं छ पछि वानर को यो ति भै भु हं छ ॥ २० ॥ कु ल धर्म परित्या गि अ
कर्म कुरु ते यदि ॥ स्वर्ग ते व भवे तस्य नी रयो के म ना यि व ॥ २१ ॥ आफ
ना कु ल धर्म कन खो डिय दिता अकर्म जो ता ग छ न त भू नाई स्वर्ग कै ले प नि ह
दे न ^{इस दिनु ला भनि भु का लाई ठो सर द्या द्या को ग व न} ॥ २१ ॥ न के अज्ञा गि द भि सा

अधर्म
धर्म

धर्मधर्मलिताउजेत ॥ अधर्मानरहस्वर्ग पशुयो नो भवति ॥ २२ ॥ अध
मले अनाचारले गहि धर्मवलिजांछ तेही अधर्मले गहि ते क्लार्ह स्वर्ग के लेप
तिरुदेन पशुयो निमानि भयहंछ भविजांनु ॥ २२ ॥ उनमा पतिव्रतानां
उनमो धार्मिको नृप ॥ उनमो द्विज आचारी उनमो निग्रही यती ॥ २३ ॥
स्त्रीजातिमा पतिव्रता स्त्री उनम सर्वराजा मा धर्मात्मा राजा उनम वा
सरा हरमा आचारगर्वा ब्राह्मण उनम यति हरमा इन्द्रिय निग्रह

गर्वा संतापित उनम ॥ २३ ॥ पतिभक्ति स्त्रिया नित्य नृपस्य सत्य वा दि
ता ॥ क्षत्रियस्य राजा शौर्य यतेन्द्रिय निग्र ॥ २४ ॥ स्त्री हरको नित्य पीत
को भक्तिगर्तु ॥ राजाले नित्य सत्य वचन बोलतु क्षत्रिय हरले बो
लतु क्षत्रिय हरले तिलै रणमा भुटतु जाति हरले सदा
इन्द्रिय निग्रह गर्तु ॥ २४ ॥ नच विदुष पहे देवी न गंधा अ
पह नदि ॥ नच विप्रा तपे बरौ विदु मन्त्रा पहे नहि

२५॥ विष्णु मन्दा बडो अको देव ताको हि छैन गीगा मन्दा
अको विडो नदि पतिक हि छैन बाला मन्दा बडो अको जित
राको हि छैन भक्ति ना विष्णु मन्दा बडो भक्ति को हि
छैनः॥ २५॥ ना न्यस्तु न्योति धर्मो न दा न्दु गुरु रूप
नः॥ न च तत्त्वा प्रतिष्ठता न तु ल्प्यो वा न बाणा ए॥ २६॥
तिथि मा ग-या को पुराण वरो व ए अरथा उ मा ग-या

को पुराण हुदै न गुरु लाई चठा उतु वरो व ए दा न्दु को
बडो छैन पति बना स्त्री संग को एक स स्या मा सु तनु
वरो व ए रोषी सग सुतनु होइति जाति मनु व्य वरो व ए
सा मा न्य मनु व्य रो व नः॥ २६॥ न तु ल्प क्षा वि य सु ए न
तु ल्प सत्प वा दि के॥ नै व तु ल्प रा म ता म नै व वै का द से
उ नः॥ २७॥ ए रा मा सु र क्षा वि य वरो व ए अको हुदै न

स सव चतवोल ता मनुष्य वरो व [अहमनुष्य हरे
 राम ता ममावो व [अहममहे न एकादेसि को वगव
 हो व [अहममहे न ॥ २७ ॥ इति श्री गभगितायी वृष्टो
 ध्या य ॥ ६ ॥ **अजुम उवाच ॥** अधर्मश्च सुधर्मश्च क
 थमुक्तं यत्ते विभो ॥ कर्मकर्मफलं किं हि इदं बुद्धिना हतं ॥ १ ॥
 अजु राविनिग हतं ह्येव भो व्यापकं यदिति यदिति निवे

भयापहं यो धर्म यो अधर्म किं सा गी उ त्पत्ति भयो त
 लो व्यापक मा यो कर्मको फल यो अकर्मको फल भति न्या वेव
 हा एक सो गी उ त्पत्ति भयो हेन ता हत यो वात कं ह ॥ १ ॥ श्री भ
 वम उवाच ॥ अजु न किं यत्ते कर्म सु कल्या हि विविक्ता र्हेव
 लोकी मनुष्या ना न गच्छति तथा जुज ॥ २ ॥ श्री भगवा र्आशा
 ग ह ह र हे अजु न म ला इ न जाति क त क ल्या दि गी वि स्ता ए वि

धिले गहि जो ता कर्म गछे तिमनुष्य हूतपो कर्म ले गहि देवलोक
मा मला इच्छा न करे पाका कर्म जे पुग देन न ॥ २ ॥ ^{कर्म} विल कर्म
इव देवा कर्म ली मेलने हूी ^{कर्म} इ ^{कर्म} विष प्राप्ति कर्म ना
लि न जाय ॥ ३ ॥ हे अजु न कर्म ले गहि देवता पुजा प्रमाण
या हीले पति कर्म ले गहि ^{ताई} दिन पाया कर्म ले गहि हू इले ^{कावम}
विषया या कर्म हू न भया वात होइ न कर्म हू न गि जानु ॥ ३ ॥ ^{पुच्छो}

कर्म भे ^{कर्म} हू न सि ^{कर्म} कर्म रा बी डी न शसि ॥ कर्म राम बनावत कर्म
नालि न जाय ॥ ४ ॥ हे अजु न से ता पति कर्म ले की वस ले ग
हि ही दि भई न कर्म ले गहि ^{कर्म} नुमा ^{कर्म} न ^{कर्म} दि न दे वि छ
न कर्म ले गहि कन राम न ^{कर्म} इव न वा स ^{कर्म} प ^{कर्म} यो न स ^{कर्म} थ कर्म क
न हू न भया वात होइ न कर्म हू न गि जानु ॥ ४ ॥ कर्म ता न
कलि ^{कर्म} इ ^{कर्म} कर्म ता ^{कर्म} विल तो हत ॥ पा रा ड वा नी व नो वा स कर्म

जनिनामचन्द्रकाहापुस्तक

नास्ति न चार्जुन ॥ ५ ॥ हे अजु न कर्म लेगी विलिख जा परिवा
प्राप्त न भवति यो कर्म लेगी एव न मोक्षो कर्म लेगी पौरुष हतु ना
इ वत वास गतु न पौ न स थ कर्म हत भैया वात हो इत कर्म
तास पछ मरि जात ॥ ५ ॥ कर्म ते व गति पाप्मी कर्म ते व हिलि प्य
ते ॥ कर्म ते व सुबुद्धिः स्या कर्म नास्ति न चार्जुन ॥ ६ ॥ कर्म ले
गी उ न म गति पाप्मी हुँ ह कर्म लेगी कत कर्म को ले पहुँ ह

कर्म लेगी सुबुद्धि हुँ ह कर्म हत भैया वात हो इत कर्म हत मरि जात ॥ ६
॥ कर्म नाल भते राजी कर्म लो व हि जोषि ती ॥ कर्म रणा श्री गुरु
त्वा च कर्म नास्ति न चार्जुन ॥ ७ ॥ कर्म लेगी राज्या दिको
लाभ हुँ ह कर्म लेगी कत स्त्री लाभ हुँ ह कर्म लेगी कत व
डा श्री गुरु हुँ ह न स थ कर्म हत भैया वात हो इत कर्म त
वात वा छ मरि जात ॥ ७ ॥ लला ने लि पि ती य न तु कर्म भवि

वक्ति मात्यथा॥ सुखदुख भयो लोक अग्र अग्रिहि धावति चावति
॥ ४॥ ललातमा लेखिया को ^{जो} कर्म ^{हो} सो ^{हो} स्वयं ^{हो} हृद तस दे
पवेष्टि रिक अने किहि पनि हु ^{हो} न सुखदुख भयो लोक निश्चय
अधि बाट पाउछ ॥ ५॥ देवलोक मनुष्या ^{हो} मुनि ^{हो} गंधर्व योगि
न ॥ पुर्व कर्म सुख ^{हो} वीधा ^{हो} सर्व ^{हो} वे पाहुने दग ॥ ६॥ देवता हनु
नुय ^{हो} हनु ^{हो} मन ^{हो} मा ^{हो} तिल ^{हो} म ^{हो} या ^{हो} को ^{हो} मुनि ^{हो} हनु ^{हो} गंधर्व ^{हो} गरुड ^{हो}

जि ^{हो} हनु ^{हो} ला ^{हो} दि ^{हो} त ^{हो} वै ^{हो} आ ^{हो} फू ^{हो} ला ^{हो} पुर्व कर्म ^{हो} त ^{हो} वि ^{हो} सु ^{हो} ख ^{हो} दु ^{हो} ख ^{हो} ले ^{हो} वा ^{हो} चि
या ^{हो} का ^{हो} छ ^{हो} न ^{हो} भ ^{हो} ति ^{हो} जा ^{हो} र ^{हो} पुर्व कर्म ^{हो} सब ^{हो} का ^{हो} न ^{हो} ल ^{हो} वा ^{हो} र ^{हो} भ ^{हो} ति ^{हो} जा ^{हो} र
॥ ७॥ स ^{हो} स ^{हो} मं ^{हो} वि ^{हो} र ^{हो} के ^{हो} व ^{हो} र ^{हो} म ^{हो} प्र ^{हो} मु ^{हो} ल ^{हो} कु ^{हो} न ^{हो} ते ^{हो} त ^{हो} हि ^{हो} त ^{हो} पु ^{हो} र ^{हो} ग ^{हो} र्ध ^{हो} अ ^{हो} था
पा ^{हो} थ ^{हो} य ^{हो} था ^{हो} वि ^{हो} र ^{हो} च ^{हो} र ^{हो} न ^{हो} ॥ १०॥ हे ^{हो} अ ^{हो} नु ^{हो} र ^{हो} ज ^{हो} सो ^{हो} फू ^{हो} ल ^{हो} मा ^{हो} री ^{हो} च
स ^{हो} दा ^{हो} र ^{हो} छ ^{हो} ज ^{हो} सो ^{हो} दु ^{हो} द ^{हो} मा ^{हो} धु ^{हो} उ ^{हो} र ^{हो} ला ^{हो} को ^{हो} छ ^{हो} ज ^{हो} सो ^{हो} म ^{हो} नु ^{हो} य ^{हो} मा ^{हो} री
दे ^{हो} त ^{हो} र ^{हो} ला ^{हो} को ^{हो} छ ^{हो} दे ^{हो} वा ^{हो} मा ^{हो} पा ^{हो} री ^{हो} स ^{हो} र्व ^{हो} ज ^{हो} न ^{हो} ला ^{हो} इ ^{हो} प्र ^{हो} ला ^{हो} द ^{हो} ग ^{हो} धु

रह्याकोछ तलैतरहलेसैपुणकर्मलागि रह्याकोछ भगिजा
न॥ १० ॥ अजुतउवाच॥ बपुरादिनिलसैभ्याप्रहिउ
वगत्रयी॥ एकात्मासर्वदेवेषु प्रकृतेभित्तताकथी॥ ११ ॥
अजुनवित्तगदह्दरहेभी कृष्णचौगसिलदाबोतेभया
कोजीवजातिरहलेयावेपुवनधाकिरायाकोछ तिसै
पुणजिवजाति^{सैवजस}नामात्मा भयाएकेछ तैपतेकर्मस्वभाव

^{भयाको} भित्त^{भयाको}काएएलेहोसोकाएणमलाइआग्गगनुहो
स॥ १२ ॥ श्रीभगवानउवाच॥ कर्मस्वभावोदेहस्वसर्वप्रकि
तिभित्तपत॥ ममभक्तिस्वभावोयपद्मपत्रोदकीयथा॥ १३
॥ हेअजुनयोदेहताकेवलआफ्तापूर्वकर्मकास्वभावलेग
रिउत्तमनहुछतेसोकाएतलेहेहपतिस्वभावप्रतिमिल
हुनजाँछपएतुमाभक्तिरह्यास्वभावभयाकामनुस्यह

सो कमल का पात माए ह्या का पातिवरो व भया का अलि
बमै रहि ह्य न भनि जाय ॥ १२ ॥ निगुनी तिमै वं लु अमुदेज
लम डे वं ॥ निगुनी रा देव सुगुणी मुल मेको विहिम
गे ॥ १३ ॥ वं लु का केवल गुण ले रहित भया को अति निमल
स इछ जलै मेघ का विच माए ह्या को जल को उपमा भ
या को बाए जल न पाई कत मिथो गी कत मेघ हो ५६६

तसै गीमल निगुनी वं लु देवि सगु रा वं लु हुँ छ तेहि नगु
न देवि सै साए हुँ छ पर नु सी पुरा को मुल का एरा ता ए
के छ ता पाति को एरा ॥ मिल मिल देवि ह्य भनि जाय ॥ १३ ॥
यथा मेघ जलै वं लु ज राई पं सा ते चरे ॥ तथा विस्वम
मुप न भु नु मो पीड न ड तै ॥ १४ ॥ जलै मेघ देवि पाति प
व पाति को उ पति हुँ छ तेहि जल देवि वृथि को उ न
हुँ छ तेहि पृथि वी मा सै सा ए को उ न न हुँ छ तसै नी

गुरा देषि सगु रादे षि ही सा हूँ ह भनि जात हे अजु न
॥ १४ ॥ अजु न उवा-ज ॥ निमल निगु सी सु धी प्रवे गत सगु
न भवे न केन वा धी धर्त प्री रिई कु हिज ना दत ॥ १५ ॥ अजु
न विनि गछत हे ज ना दन व लूना आनि निमल त सौ अति सुध
भया को छ भविक हि या को छ सो सगु राध स हूँ ह सो व्या
ले गति पवन पाई छ सो आजा गनु ह वा स ॥ १५ ॥ श्री भग
वान उवा-च ॥ परमा वी धर्त ज्ञान ॥ जिवात्मा कर्म क धर्ती पर

मा निगु रा स न जिवात्मा सगु रा भवेत ॥ १६ ॥ श्री भगवा
न आजा गछ हे अजु न परमा जो छ न गि सा नि ले पकै छ
द जिवात्मा ता कर्म ले गति पकै छ ता हा जिवात्मा परमात्मा
कत कर्म का फल ले गुण ले र हित परमात्मा गुण ले स हित
जो छ सो जिवात्मा हो भनि जात ॥ १६ ॥ परमात्मा गति गुण स
नात्तिकर्म फल ले त ह ॥ नात्ति हयो भये सो क परमात्मा
मा निचाजु त ॥ १७ ॥ निगु रा भया का परमात्मा कत कर्म का

दुख प्राप्ति मुखपत्नी हुं देने से सदाई को ब्रह्म भयपत्नी रहै नः ४ हपुको
कर्मका फल को इच्छा रहै न हव भयशोक इत्यादि पति परमात्मा
विषय रहै न हे अजुति मीजात ॥ १३ ॥ परमात्मा न तो दुःख
न दुःख दुःखामिच्छा न कालोत्तर भय मृत्यु परमात्मानि चाजुत
॥ १४ ॥ हे अजुत परमात्मा लाइ जाये न मृत्यु कर्म भया
ति परमात्मा लाइ जाये विविध के हे अजुता रहै न हे भविजा
त ॥ १५ ॥ नाता कर्म एिकु रहै नाता भ्रमुमु पाजति ॥ अनेक व

धरति जिबो भिगु होति भुमो भवेत् ॥ १६ ॥ हे अजुति जिबो
को कता नाता रहै को कर्म गच्छ नाता रहै को भ्रम नाको उप
जना पति गच्छ इहु ईकर्म भ्रम ले गी वाचि या को छिंकी
हउछ भिगु राखी ना सीपु राखि चको कारे रा भयाका भ्रम दि
ले हित भयाको हउछ भविजात ॥ १७ ॥ मत सो वाजि तिपु
रा मत सो वाजि त धरि मत सो वाजि तीजार्थ मत हाथै य

मजिती ॥ २० ॥ हे अर्जुण पुरुष परिकेवल मनैले गरिउ पाजि
 तहूँ धर्म नाने मनैका उद्योगले उपाजि तहूँ पाप व
 निमनैका उद्योगले गरिउ पाजि तहूँ लोता पात्रिम
 नैले उपाजि गरि तहूँ भक्तिजात ॥ २० ॥ मनस्थि र भवे
 धैर्य दधै यथि लमजुता मनसै वस्थि र कृत्वा वृत्त लोने
 नमर ॥ २१ ॥ जो मनस्थि र ता धैर्यको आश्रय गनले ग

तहूँ धैर्य भियाता मन सहचंचल र हूँ धैर्यको आश्र
 य गरि मनलाई स्थि र गुरुको स्थि र भयाको मनलाई हली
 हली वृत्त ज्ञानमाल गाउनु ॥ २१ ॥ दुष शोकी न कर्तव्यो लो
 भ मोहो कदाचन ॥

॥ २२ ॥
 शिरो गभगिता या स प्रमो अघ्या य ॥ २ ॥ पूर्व सजात
 को अभ्यास गयी मनुष्यले दुष परिसो कपनिन गनुक

राचितलोभमोहादिपरितगर्तु एवमज्ञातसिद्धिद्विभ
निजातु ॥ २ ॥ इति श्री गभगितायास्तप्रमो ध्याय ॥ ७ ॥
आजु नउवाचः मतसोहि भवेद्विधमतोहि चंचलीपुण
मतसाधकतैसर्वनिर्मलहिमतकथं १ केहिअ
जुगविनिगदतु निश्चययोविश्वसैसा मनेकोभ
मले भयोकोहो केहिमतजस्तोचंचल दो श्रीवस्तुदेव

सोसपुणगयाको मतैलेहो भनितो मतनिर्मलस्थिरक
सागीहोलाहेश्रीकृष्णआज्जाहवस १ मतसाहिज
गतवाप्री ममापिहीहिचंचलीएतन्मतकृतकर्मनलि
पतेकथविभो २ हे श्रीकृष्णयोजगतकेवलमतले
गीव्यामगीयाकोहयोमततावहुतैचंचलहोयोम
तलेगपाकोकर्मजोहोसाकसोगीको न युक्ति लेला

जन स कै न सो वात म लाई आ ग्या गनु ह बो स भति अजु न
 विनि ग र भ या २ श्री भगवान उवाच मनो दोषो म
 सि वै उ न्यति प्र ल य गत मनो कु स मनो वि य म न के र्म न
 लि प्यते ३ हे अजु न म न मा ह्या को जति दोष छ रति
 स वै उ स न्त हु छ न के र्म म वै मा नि नू प नि हु छ नू म न जो
 ह नो क के र्म स मा ह्या यो च न्या पति ते हि हो प र क

म स्व प पति ते हि हो प र क म स्व रू पति म नै हो सो
 म न ए लो ह भति जो मा म नु य ला इ के म लि प्र ह है
 न नू भति जान ३ मनो गी गा मनो सि य मनो दे वी न
 ए न मनो भा नु म न श्व दो म न म गि श्व म न रू न
 म न ता हे अजु न गी गा स्व रू प पति हो कि र्थ स्व रू प
 नि ते ही हो म न ता के व ल नि र्ज न स्व रू प दे व ता हो सु

यु त्वरूप परिचयद्वयरूपे अग्नि त्वरूप परिवायु त्व
रूप परिमने हो मन होये यीही त्व दो जो पदार्थ को ह
मने हो न मने जात ४ मनो धारि आकाश मन
सक्ति मनसि व ॥ मनो जि बो मनो का लो मन सवि मनो
यस ५ । पृथिवि परि आकाश परि सक्ति त्वरूप
परि सो व त्वरूप परि केवल मनो हो तै लो जि प परि काल प

मि केरि ह छी परि स त्वरूप परि मने हो भनि जात ५ म
न पुण्य मन पाप मन कर्म ले स्यु हा ॥ मनो हर्षो मनो दुःखं
मनि भोगि पुण्य ६ पुण्य पाप दुःख मने हो कर्म का मो
ग कान दुःख परि मने हो हर्ष परि दुःख त्वरूप परि मन
हो हर्ष परि दुःख परि त्वरूप परि मने हो स पुण्य पदार्थ
को मो ग गत्य परि मने हो सो र कामालि क इ दि जलो

परि मने हो भक्ति जानू ६ मतो माया मनो मो हो मे तात्
हामनो ६ में ॥ मनो कामो मत को धो मत आत्मा पाए पर

७ हे अर्जुन माया परि मो ह परि हृद्या परि हृम परि का
म परि को ध परि मने हो आत्म स्व रूप परि मने हो आत्मा म
नू पर हृमा को पाए तमा स्व रूप परि मने हो भक्ति जान
८ मतो योगि मनो भोगि मत कर्ता मिश्रण मनो जा

नि मनो ध्या नि मनो धर्म अधर्म क ६ हे अर्जुन यो
गि स्व रूप परि भोगि परि हृ पुरा च ए च को कर्ता विना उ
पाध्व स्व रूप नि मनो हो ध्यान गन्त परि ज्ञान रूप प
नि धर्म परि अधर्म परि केवल मनो हो भक्ति जानू ६ एक
जन्म भवेत् ६ हो बहु जन्म मनो तथैवै के मे मो पा
थ बहु थ विरा चा ह्ये ६ हे अर्जुन अनेक जन्म

मा एकजन्ममा बडा भागले मनुष्य चतुरहुँदुखै जन्म
माता बुद्धिमान हुँदै न तस अर्थ मन्त्र कह पाथ्यो विष
यमान लाउनु एकै अर्थ ब्रह्मा मा मात्र मन लाइला
इष्टमनु ह मन लाधे स्थिर योग मन्त्र साधना पाग
तिः अजुन उवाच कथं जिह कथं काल कथं मृत्यु
जगद् कथं पुराण कथं पाप कथं कर्म न लिप्यते १०

हे अजुन मन लाइ साधना गी स्थिर भया को जो हो सो
स्थिर योग हो मन लाइ साधना गनु यो जो हो स्वहि प
रम गति हो भानि जान अजुन उवाच हे श्री कृष्ण जिव
भक्त्या को कस्तो हो काल भक्त्या को कस्तो हो मन्त्रा भक्त्या
को कस्तो हो पुराण पति पाप पति कस्तो लेह कस्तो तर
ह लोक मर्गो ले प हुँदै न सो आशा हवो ते भानि अ

चुन वितीग चार श्री भगवान आता गछिन १०

श्री भगवानु उवाच स्वयंजिवो स्वयं काल स्वयं मृत्यु
तथा जनु ॥ स्वयं पुराण स्वयं पाप स्वयं कर्म तलियुते

११ श्री भगवान आता गछिन हे अजु जिव पापि आ
फै हो काल पापि आ फै हो मृत्यु स्वस्व पापि आ फै हो तत्तै

पुराण पापि आ फै पाप पापि आ फै हो सब ता आ फै भै ग या पछि
आ फै कर्म को लेय ह देन भनि जान्तु ॥ ११ ॥ अजन उवाच
को कस्य दीयते हान को कस्य च प्रति गह को वा भोग स्य क
नैव को वा दुष भुज कि हितो १२ ॥ अनु वितीग चरु हे श्री क
लजि को कस लाई हान दि क को वान को को भोगि छ को रा नी छ
लोदा क को को हो दु स्व को भोगि छ को हो आ गनु ह वो सर ॥ १२ ॥

श्री भगवानुवाच स्वयदाता स्वयं मोही स्वयं भोगक
 रीतिरिति सुखं च स्वयं दुःखं निर्मलं नृचार्जुन ॥ १३ ॥
 श्री भगवानुवाच ^{जहन्}दिन्यापनि आ फे हो दिया को भोग
 गन्पापनि आ फे हो भोग स्वस्वपनि आ फे हो दुःखपनि आ
 फे हो दुःख को भोग गन्पापनि आ फे हो सोता आ फे स
 निर्मल ह भनि जान १३ अजुन उवाच कथं सुराप म सुं

माह

राप च कथं च सुस्थि स्थिते कथं प्रलयं सर्वको इह ब्रह्म
 नाह न १४ अजु विनि बोह हे श्री कृष्ण सुराप म न्या को
 को हो अस्य न्य म न्या को क्या हो के विठि या स्थि ए म
 को म्ना हो का पनिक सो हो क सो गी प्रलय यह ह हे न नाह ने यो
 का न आ सा हो स भति अजु रा विनि गर्ह न ॥ १४ ॥ श्री भगवा
 न उवाच ॥ स्वयं सुराप म सुराप च स्वयं च सुस्थि पुन स्वयं

बलयकर्ताच स्वयसहाकारक १५ श्री भगवानुत्तमाचार्य
सुस्यपतिआफेहोबठियास्थिरफतिआफेहोप्रलकोकर्ताबना
उत्तापतिआफेहोप्रलयवनाइसहावगार्तापतिआफेहो
भतिजानहेअजुन १५ इति श्री गुरुभिरुताया अष्टमोऽध्याय
८ अजुनउवाचपूर्वज्ञाननराकेडुल्लभिकलीभवेत्
कर्तव्यश्च महावीरानिखानसुखकथहरे १ फे।अ

निकितिअछतहेहरेमनुष्यहल्लाईअतिदुलभयाकोवस
कैसकसोगीपाइहवडीसमुद्रनलोभयाकोएलोवसज
नमाबेलज्ञानकोअभ्यासकसोगीधर्तुकोअभ्यासग
रिमनुष्यहल्लाईनिर्वानमुनिकंसोगीयाइहभनिकि
निगदभया १ ज्ञानरुततथातिथिबनतेचसुचिकी
यावेइसास्वसुमितिलोकेनिवानीचकथीहरे २ हेहज्ञान

यज्ञभयो तस्मैतिथेदिगुयुयोसंपुण्यजोह सोताचिनसुध
जनीतिमिन्काकिआहोयो लोकमावेदसास्त्रस्मृतिइसंपु
एषिहनुनापतिगिनिवातमुक्तिकसोगीहोलाहेहरेभानिव
निजदभया २ श्रीभगवानउवाचस्नानद्वयेनप
स्नानव्रतपुजापूर्विकियाहीभक्तिविनापाथसर्वकर्म
निरर्थक ३ श्रीभगवानआज्ञागच्छन्हेआजुतिथी

दिमाकोस्नागतीलेदातगतीलेजबगतीलेश्वरुगतीले
गीर्वाणज्ञागुहैनतिसंपुण्यकर्महोभक्तिकीतानि
सफलहैहैतभक्तिजादू ३ नातादेवानुपुजायतिनाता
कर्मकरेयति नमभक्तिविनापाथनिरर्थसर्वनिरर्थक
४ हेअजुतभनुब्याहहभशोकदेवताहहकोपुजागैह
दतापीतगभक्तवितिगयाकाकासहहसंपुण्यनिरर्थ
हुहह ४ आनारुखितेकोतिदातपतिगिआन

त गवाकोटि सरु स्याति न मुक्तिश्च विना हीरे ५ मनुष्य
हृकोटि आभीरु गह्वरापनि परवत्तवरो वा सुवर्णकोटि
गह्वरापनि कोटि गोदात गह्वरापनि केवल हीको भाक
विताति न हतुला ६ मुक्ति ही भाक्ति ता कदाचित् न हुदैत
भीति जान ५ कोटि कोटि कृताय सा दात कोटि जप स
था आत्मतत्त्व न जानीति सर्व कर्मणि एथ किं ६ कोटि को
ति यथादि जरुतापनि कोटि दात गह्वरापनि कोटि को

जप गह्वरापनि जाहा समुद्रात्मतत्त्व जान्या कोटि न सो ते पु
रु कर्मणि एथ हि हकर्म को अर्थ पाउदैत भीति जान ६
कोटि जम कृतापनि पुण जन्म ही स्पृती सर्व पाप विचार
स्यान्ते विष्णु लोकोत्त गच्छते ७ कोटि जन्म माग पाको
पापता मरुता सयेमा एक पलत ही को सम एग गयो भन्या
पाप स पुण तो स भै विक्षल लोक मासा मनुष्य प्राप्नुहु छ भाने

जी न ७ श्री घाटि युद्धाति च वीर हा वा ल घातका भज
ते पद विधु विधु लोको सग छति ६ श्री घात गन्य भिया
पति गुत गुत मान्य भिया पति वीर मान्य भया पति बाल
कछाति भया कि र जो ता पद म विधु को भजना गंद छि
ति से पुरा पाषाण सभे विधु लोक मा पा प्रहृष्ट भिजा
न ६ त विदति त ए मु धा न ज जति न मा त र अ मा
ग बु धि ना ति प द ह न ग ति त र के भु चो ६ हे अ नु

र मु व भिया का म नु व्य ह र म ला इ न जा दा छं दा म क न भ
ज न ग र्दे न ति म नु व्य ह र कु मा ग मा बु धि भ या को छ दा न
ए क मा धे र का ल स म दु र व भो ग र्दे भो र जा न ६ अ नु
न उ वा न कि क म कि न प ति थं कि ज ग्य ध म कि क रिया
कि भ स मा ग वि ता दे ह कि क म की द म क्ष री १० अ नु न
के ए कि नि ग र्दे हे श्री कृ ष्ण क र्म भ या को का हो त प भ न्या

का क्या होति थ भिन्याको क्या हो ज प भ न्याको र धर्म भिन्या
को क्या हो कि या भ न्याको क्या हो हे ह मा वि भुति को धा
रणा भ न्याको क्या हो की दु मु ला दि को भ दान जो हो सो क
मि क्या हो भोति वि ति ग द भ न्या १० श्री भ ग वा न उ वा
च न त मो क्ष धा र न धा र त मो क्ष ज प री त ण न
मा क्ष की द हारे न मो क्ष मि द्वि य ति ग ह १० श्री भ

ग जा न आ आ जा ग र्छ र हे अ जु धा र ण प ति धा न पी ति
हु इ मो क्ष हो इ न ज प ले पी ति त ण स्या ले प ति मो क्ष दे न
की द फ ल आ हा र ग न्या ले त ति मो क्ष ह दे न के क ल इ ति
य ति ग्र ह ग न्या मो क्ष हु छ ११ न मो क्ष सा ल्प प छे न
न मो क्ष सर्व दा सु चि त मो क्ष धर्म कर्म पु मो क्ष मि द्वि
य ति ग्र ह १२ हे अ जु र सा स्त्र प हू ना ले प ति मो क्ष हु

देन सर्वदा शुद्ध रहना ले प्रति मोक्ष है देन धर्मगर्त
ले प्रति कर्म गता ले प्रति मोक्ष है देन इन्द्रिय निग्र
ह गता ले मोक्ष है देन भाति जात १३ त मोक्ष यज्ञ
क्रिया या न मा क्षि दात की चत्त त मोक्ष धर्म कर्म
पु मोक्ष मिन्द्रिय निग्रह १३ हे अर्जुन क्रिया ले
प्रति मोक्ष है देन सुवशा को दाता दया ले प्रति मोक्ष
हु देन धर्म कर्म जना ले प्रति मोक्ष है देन केवल इन्द्रि

यति ग्रह गता ले मोक्ष है देन भाति जात १३ त मो
क्ष स्नान सु ले पु त मोक्ष मर्म धारण त मोक्ष मोक्ष
नि क्रिया या मोक्ष मिन्द्रिय निग्रह ॥ १४ ॥ हे अ
र्जुन स्नाता दकार मया को प्रति मोक्ष है देन वि
पुति धारणा गता ले प्रति मोक्ष है देन कोटि क्रिया क
र्म गता ले प्रति मोक्ष है देन मोक्ष ता इन्द्रिय निग्रह

जगत्सिद्धिं भक्तिजान १४ यावद्विद्वि विकारे न
आत्मतत्त्वमविद्यते तावद्भानामिच्छति ततो न
स्थितेति १५ हे अजुन जाहासमम बुद्धिको विहा
रुहैव ताहासम आत्मतत्त्व पाइत जाहासमम
न पाने सिद्ध है शासिद न हुज्जाल मत परिशी
रुहैव भक्तिजान १५ अभ्यसरे भवेच्छुद्धि कृतकमे

विनिमले अजुन उवाच कर्म कर्म द्वयोर्वि यलो हाथ
हचवधुन केन कर्मविषा केन लोको मुच्यत वधना
रुहैव कर्मतिमलगताले अन्तकन भुधुहैव
अजुन उवाच हे श्रीकृष्ण कर्म रुअकर्म दुबैको वाधा
को प्रशंसता जाहा कोवता याको विचि ले यो लोक
ता कर्म कर्म को वधन दोष मुक्तु देन रुभक्ति विनिग